प्राक्तन विद्यार्थी संघ, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सहयोग से दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक : 1.11.2018 और 2.11.2018

विषय : छायावाद के सौ वर्ष : पुनरावलोकन एवं पुनर्मूल्यांकन

उपविषय : 1. छायावाद ऐतिहासिक दृष्टि 2. छायावाद: स्वरूप विश्लेषण 3.छायावाद: काव्यधारा 4. छायावाद : जयशंकर प्रसाद 5. छायावाद: सूर्यकांत त्रिपाठी'निराला' 6. छायावाद: सुमित्रानंदन पंत 7. छायावाद: महादेवी वर्मा 8. छायावाद: गौण कवि 9. छायावाद: सर्जनात्मक गद्य विधाएँ 10. छायावाद: समीक्षा का क्षेत्र (छायावाद साहित्य की समीक्षा एवं छायावादी समीक्षा दृष्टि) 11. छायावाद: आधुनिकता के संदर्भ में 12. छायावाद: जीवित तत्व 13. छायावाद साहित्य: अभिव्यक्तिगत संदर्भ14. छायावाद: भाषिक पक्ष 15. छायावाद: दार्शनिक पक्ष 16. छायावाद: शाश्वत मूल्य 17. छायावाद: काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन 18. छायावाद: परवर्ती साहित्य पर प्रभाव 19. छायावाद: परवर्ती वादों के परिप्रेक्ष्य में 20. छायावाद: समसामयिक भारतीय साहित्यांदलनों(असमीया रमन्यासवाद आदि के संदर्भ में) 21. मूल विषय से संबंधित अन्य विषय

संगोष्ठी के लिए निर्देश : संगोष्ठी पत्र में प्रस्तुतकर्ता के मौलिक चिंतन का होना अनिवार्य है । पत्र के साथ सार-संक्षेप संलग्न किया जाये । सार-संक्षेप के नीचे बीज शब्दों का उल्लेख हो । पत्र इन बिंदुओं में प्रस्तुत किया जाये- 1. प्रस्तावना 2. अध्ययन का महत्व 3. विषय का शीर्षक 4. अध्ययन का उद्देश्य 5. विषय का सीमांकन 6.अध्ययन में व्यवहृत पद्धति एवं उपाय 7. विश्लेषण एवं निर्वचन 8. स्थापना 9. निष्कर्ष ।

ध्यान देने की कुछ बातें :

- सार-संक्षेप 200 शब्दों में हो और उसके नीचे दो-चार बीज शब्दों का उल्लेख हो
- शोध पत्र 4000 शब्दों में सीमित हो ।
- पत्र की भाषा हिंदी,असमीया या अंग्रेजी हो ।
- शोध पत्र में MLA पद्धति का प्रयोग हो ।
- सार-संक्षेप भेजने की अंतिम तिथि 20-10-2018

पंजीकरण शुल्क : अध्यापक एवं अन्य(संगोष्ठी पत्र सहित) 1500/-, विद्यार्थी(संगोष्ठी पत्र सहित) 1000/-, प्रतिभागी 1000/- ।

संपर्क : guhindidept.alumni@gmail.com स्थान : हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय